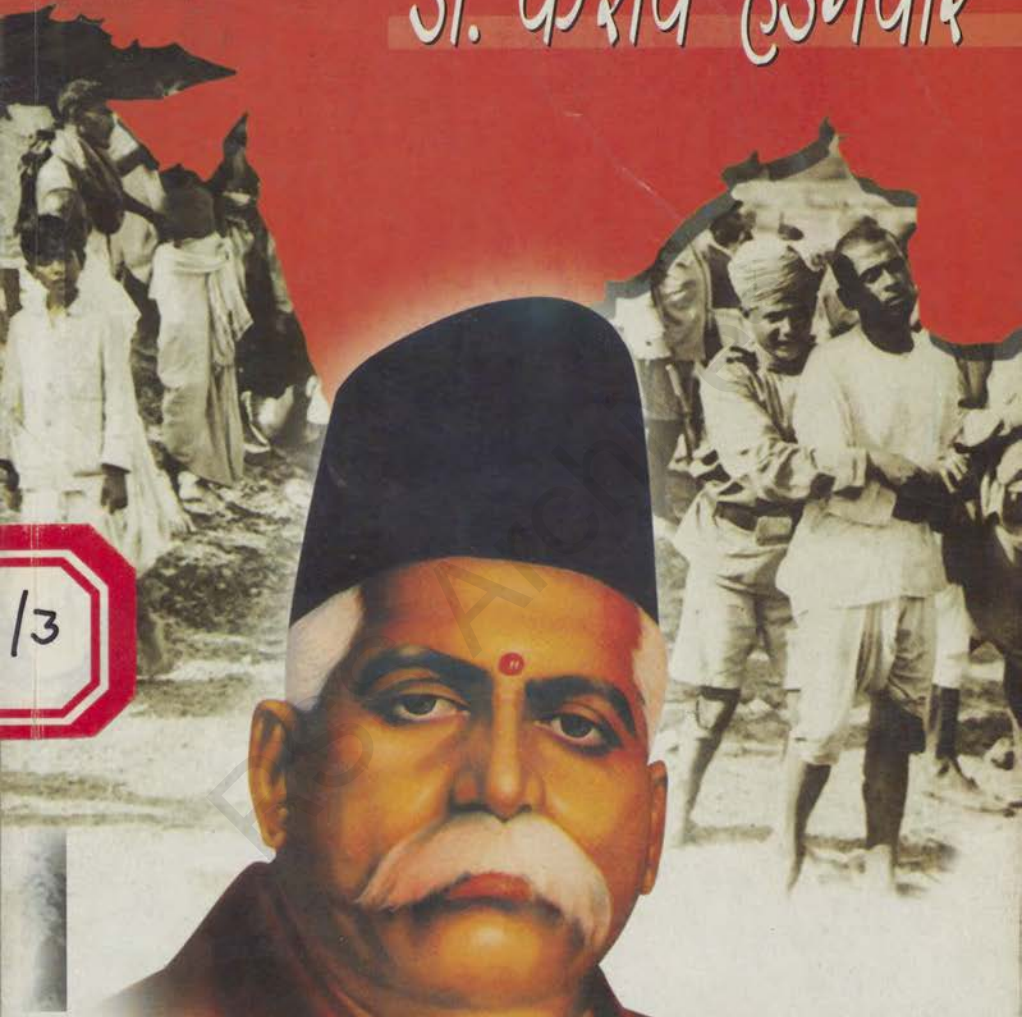
राष्ट्रीय जीवनी माला...

डॉ. केशव हेडगेवार



13

RSS Archives

जिस भूमि पर एक विशिष्ट जाति व परंपरा के अनुगामी, एक विचारधारा वाले तथा समान इतिहास वाले व्यक्ति एकत्र रहते हैं, उसी भूमि को राष्ट्र कहते हैं तथा वह राष्ट्र भी उनके निवासियों के नाम से पहचाना जाता है। ऐसे स्वजातीय लोगों के हित संबंध एक जैसे होते हैं और उनमें एक प्रकार से एकत्व की भावना विद्यमान रहती है और यही भावना उनकी प्रगति का कारण बन जाती है। भिन्न-भिन्न देशों के, भिन्न-भिन्न संस्कृति को मानने वाले, भिन्न-भिन्न विचारधारा वाले, भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज वाले तथा परस्पर शत्रुता रखने वाले लोग राष्ट्र की सृष्टि नहीं कर सकते और ऐसे लोगों के समूह को राष्ट्र नहीं कहा जा सकता है।

–इसी पुस्तक से

डायमंड पाकेट बुक्स में
जीवनी माला पर आधारित पुस्तकें

मीना अग्रवाल
राजीव रत्न गांधी 75.00
इंदिरा गांधी 75.00
लोकमान्य तिलक 60.00
लाला लाजपत राय 60.00
सरदार पटेल 60.00

महेश शर्मा
राष्ट्र गौरव ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 75.00
सोनिया गांधी 75.00
अटल बिहारी वाजपेयी 75.00
लालकृष्ण आडवाणी 75.00

हरीश शर्मा
गुरु गोलवलकर 60.00
डॉ. केशव हेडगेवार 60.00
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी 60.00
दीन दयाल उपाध्याय 60.00

परमेश डंगवाल
हिम्मत है! किरण बेदी 125.00

कुलदीप नैयर
भगत सिंह : क्रांति में एक प्रयोग 60.00

जोगिन्दर सिंह
निर्भीक और निष्पक्ष 95.00

आशा प्रसाद
स्वामी विवेकानन्द 120.00

प्रकाश नगायच
गरीबों की मसीहा मदर टेरेसा 60.00
महात्मा गांधी : जीवनी एवं जीवन दर्शन 50.00
युग पुरुष नेहरू 50.00
श्री सत्य साईं बाबा 30.00
शिरडी के साईं बाबा 40.00

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
क्रांतिवीर सुभाष 40.00

डॉ. अश्विनी पाराशर
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम 60.00

सुमित्रा गांधी कुलकर्णी
महात्मा गांधी (मेरे पितामह)
परिवार और व्यक्तित्व 120.00
आजादी के नीतिकार 120.00

अशोक कौशिक
रामकृष्ण परमहंस 60.00
योगीराज अरविन्द 60.00
स्वामी विवेकानन्द 60.00
ईश्वर चन्द्र विद्यासागर 60.00
अशोक महान 60.00

राजशेखर मिश्रा
सौरव दा 95.00
सचिन 95.00
सहवाग 95.00
राहुल द्रविड़ 95.00

डॉ. भवान सिंह राणा
वीर सावरकर 60.00
स्वामी विवेकानन्द 60.00
शहीद भगत सिंह 60.00
गोपालकृष्ण गोखले 60.00
सरदार वल्लभ भाई पटेल 60.00
महाराणा प्रताप 50.00
छत्रपति शिवाजी 50.00
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई 50.00
चन्द्रशेखर आजाद 60.00
रामप्रसाद बिस्मिल 60.00
गोविन्द वल्लभ पंत 60.00
अशफाक उल्ला खां 60.00
गणेश शंकर विद्यार्थी 60.00

महेश अम्बेडकर
भीमराव अम्बेडकर 50.00

अवधेश चतुर्वेदी
भारत का स्वाधीनता संग्राम 60.00
1857 का स्वतंत्रता संग्राम 60.00
मदनलाल ढींगरा 10.00

पुस्तकें V.P.P. से मंगवायें। डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/- तीन पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री।

डायमंड बुक्स

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II नई दिल्ली-110020, फोन : 011-51611861, फैक्स : 011-51611866
ई-मेल : sales@diamondpublication.com, वेबसाइट : www.diamondpocketbooks.com

PSS Archives

राष्ट्रीय जीवनी माला

डॉ. केशव हेडगेवार

हरीश दत्त शर्मा

RSS Archives

डायमंड बुक्स

ISBN : 81-288-1028-6

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : **डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.**
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन : 011-51611861
फैक्स : 011-51611861
ई-मेल : sales@diamondpublication.com
वेबसाइट : www.diamondpocketbooks.com
संस्करण : 2005
मूल्य : 60/- रुपये
टाइपसैटिंग : ईशा कम्प्यूटर्स, दिल्ली-64
प्रिंटर्स : **आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा दिल्ली-32**

DR. KESHAV HEDGEWAR **Rs. 60/-**
by Harish Dutt Sharma

RSS Archives

अपनी बात

सन् 1925 की विजयदशमी के दिन पंद्रह युवा मित्रों के साथ डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने एक संस्था की स्थापना की। अभी इसका नामकरण नहीं किया गया था। छह महीने बाद 17 अप्रैल, 1926 को इस संस्था का नामकरण हुआ—**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**।

इससे पूर्व जरीपटका मंडल, भारतोद्धारक मंडल आदि अनेक नाम आए जिन पर खुले मन से विचारों का आदान-प्रदान हुआ। डॉ. हेडगेवार अपनी संस्था को राष्ट्रीय बनाना चाहते थे। अत: क्षेत्रीय स्तर के नामों को नकार दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ—यह नाम पूरे चिंतन-मनन के बाद ही रखा गया। उस समय इंडियन नेशनल कांग्रेस देश की अग्रगण्य संस्था थी। कांग्रेस ने राष्ट्रीय कार्य हाथ में लिया था और हेडगेवार जी भी राष्ट्रीय कार्य करने जा रहे थे। अत: इंडियन नेशनल कांग्रेस से नेशनल शब्द का हिन्दी रूपांतर **'राष्ट्रीय'** शब्द लिया गया। **स्वयंसेवक** शब्द इसलिए जोड़ा गया क्योंकि इस शब्द का अर्थ है—'स्वयं आत्मस्फूर्ति से कार्य करने वाला।' और इस प्रकार "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ" यह नाम अस्तित्व में आया।

1925 से संघ की यात्रा आरंभ हुई और डॉ. हेडगेवार ने एक-एक कर लाखों लोगों को इसकी ओर आकर्षित किया। संघ के स्वयंसेवकों ने राष्ट्रहित के अनेक महती कार्य किए। स्वतंत्रता संघर्ष में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इनकी राष्ट्रीय विचारधारा से चिढ़कर अंग्रेजी हुकूमत ने इन्हें 'राजनीतिक' व 'सांप्रदायिक' तक घोषित किया और इन्हें प्रतिबंधित कर दिया। दो बार डॉ. हेडगेवार को कारावास की सज़ा भी भोगनी पड़ी, लेकिन त्वरित जन-समर्थन ने अंग्रेजों को भी झुकने पर विवश कर दिया

और उन्हें प्रतिबंध समाप्त करना पड़ा क्योंकि जनता यह भली-भांति जानती थी कि यह सांप्रदायिक संगठन है बल्कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई इत्यादि सभी वर्गों के लोगों के लिए इसके द्वार खुले हैं और ये सभी लोग एक झंडे के तले खड़े होकर एक साथ सारे कार्य करते हैं।

संघ के एकत्व ने महात्मा गांधी को भी बेहद प्रभावित किया था। वे स्वयं वर्धा में आयोजित एक कैंप में गए थे और स्वयंसेवकों से बातचीत की। बाद में जब गांधीजी और डॉ. हेडगेवार मिले, तब उनके बीच यह बातचीत हुई :

महात्मा गांधी : आपको तो पता चल ही गया होगा कि मैं कैंप में गया था।

डॉ. हेडगेवार : यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि आप शिविर में आए। आपके कार्यक्रम की मुझे जानकारी नहीं थी, अन्यथा मैं भी उपस्थित रहता।

महात्मा गांधी : एक दृष्टि से यह अच्छा ही हुआ कि आप नहीं थे। मैंने खुलकर स्वयंसेवकों से बात की और सभी बातों को जानने का प्रयास किया।

फिर महात्मा गांधी ने संघ की वित्त संबंधी जानकारी चाही। उनका अनुमान था कि संघ को धनाढ्य लोगों से सहायता मिलती होगी। जमनालाल बजाज का नाम चंदा देने वालों में प्रसिद्ध था। यह जानकर कि संघ आज तक बजाज या उनके जैसे धनाढ्यों से सहायता न लेकर 'गुरु दक्षिणा' द्वारा धन संग्रह करता है, वे हैरान रह गए। डॉक्टर हेडगेवार की कांग्रेसी पृष्ठभूमि को जानकर उन्होंने पूछा कि 'कांग्रेस में आपके प्रयत्न सफल क्यों नहीं हुए? क्या पर्याप्त आर्थिक सहायता नहीं मिली?'

डॉ. हेडगेवार : पैसे की बात नहीं थी। कांग्रेस की मनोरचना एक राजनीतिक संगठन की है। राजनीति में स्वयंसेवकों के बारे में धारणा मेज-कुर्सी उठाने वाले, दरियां बिछाने वाले मज़दूरों की है। इस धारणा से राष्ट्र का उत्थान करने वाले स्वतःस्फूर्त कार्यकर्ता कैसे उत्पन्न होंगे?

महात्मा गांधी : आपकी स्वयंसेवकों की क्या अवधारणा है?

डॉ. हेडगेवार : संगठन में नेता और कार्यकर्ता—ये दो वर्ग नहीं होने चाहिए। संघ में सभी स्वयंसेवक हैं। आत्मप्रेरणा से जब

व्यक्ति समाज और राष्ट्र के कार्य को महत्त्व देता है, तब उसकी भूमिका दरी एवं मेज उठाने वाले की नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण में नींव के पत्थर की तरह हो जाती है। साधारण जीवन जीते हुए वह असाधारण कार्य करता है। अंत:करण की एकता एवं आत्मविश्वास के कारण ही अल्प धन एवं संकटों के बीच संघ नए-नए स्वयंसेवकों का निर्माण कर पाता है।

महात्मा गांधी : कल मैंने विभिन्न जातियों के स्वयंसेवकों को साथ-साथ सब काम करते हुए देखा। यह सब आपने कैसे कर दिखाया?

डॉ. हेडगेवार : उनकी चेतना में राष्ट्रीयता का भाव एवं हिन्दू होने का अभिमान जाग्रत करने के कारण ही वे सभी संकीर्णताओं से ऊपर उठ गए हैं।

तब, संघ को महात्मा गांधी ने भी लोहा माना।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि डॉ. हेडगेवार प्रचार को ज्यादा महत्त्व नहीं देते थे। वे कर्म को महत्त्वपूर्ण समझते थे। यही कारण रहा कि 52 वर्ष में उनकी मृत्यु तक संघ की जड़ें देश भर में जम गई थीं लेकिन अधिसंख्य स्वयंसेवकों/कार्यकर्ताओं ने उन्हें देखा तक नहीं था। यही नहीं बहुत-से लोगों ने तो उनका नाम तक नहीं सुना था।

हम जानते हैं कि महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, रूस के लेनिन, चीन के माओ-त्से-तुंग आदि लोग अपने जीवनकाल में ही प्रसिद्ध हो गए थे क्योंकि वे प्रचार माध्यमों को तरजीह देते रहे थे। वहीं दूसरी ओर हेडगेवार कर्मप्रधान बने रहे। तभी अपेक्षित प्रसिद्धि नहीं पा सके। लेकिन जैसा अनुशासित संगठन उन्होंने खड़ा किया, उसकी मिसाल देश-विदेश में मिलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है।

डॉ. हेडगेवार आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन कैडरबद्ध उनका संगठन आज भी उनके दिखाए मार्ग पर अग्रसर है और देशहित के कार्यों में समग्र रूप से अपना योगदान दे रहा है।

गुरुजी के शब्दों में : "परमपूज्य डॉक्टर जी के कष्टपूर्ण परिश्रमी एवं कर्मठ जीवन से सर्वसाधारण व्यक्ति को एक आशादायी संदेश मिलता है। दरिद्रता, प्रसिद्धि-विहीनता, बड़ों की उदासीनता, परिस्थिति

की प्रतिकूलता, पग-पग पर बाधाएं, विरोध, उपेक्षा, उपहास आदि के कटु अनुभव के साथ-साथ स्वीकृत कार्य की पूर्ति के लिए आवश्यक साधनों का अत्यंत अभाव आदि कितनी ही कठिनाइयां मार्ग में आएं, तो भी अपने कार्य के साथ तन्मय होकर 'मुक्तसंगोऽनहंवादी'—इस वृत्ति से सुख-दुःख, मान-अपमान, यश-अपयश आदि किसी की भी चिंता न करते हुए यदि कोई प्रयत्नरत रहेगा तो अवश्य ही सफलता मिलेगी।"

डॉ. हेडगेवार के जीवन दर्शन से जन-जन को निश्चित ही अपने जीवन को राष्ट्रहित में लगाने की प्रेरणा मिलेगी जो आज की महती आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर यह पुस्तक हम पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है, उन्हें रुचिकर लगेगी। अपने सुझावों से अवश्य अवगत कराएं।

—लेखक

RSS Archives

अनुक्रमणिका

1. डॉ. हेडगेवार : संक्षिप्त परिचय 11
2. जीवन परिचय 12
3. देशबंधु और बांधव समाज 17
4. सफल क्रांतिकारी 21
5. परिवार में वापसी 31
6. जन आंदोलन का मार्ग 37
7. असहयोग आंदोलन 41
8. वर्धा परिषद् की स्थापना 51
9. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का गठन 56
10. संघ के महत्त्वपूर्ण कार्य 63
11. स्वतंत्रता के लिए संघर्ष 75
12. जंगल सत्याग्रह 79
13. संघ और हिन्दू महासभा 91
14. सरकारी दमनचक्र और संघ 95
15. अंतिम क्रांति और उत्तराधिकार 103
16. प्रेरक संस्मरण 109

RSS Archives

RSS Archives

1

डॉ. हेडगेवार : संक्षिप्त परिचय

पूरा नाम	:	डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार
जन्मतिथि	:	1 अप्रैल, 1889
जन्म स्थान	:	नागपुर (महाराष्ट्र)
पिता का नाम	:	बलिराम पंत हेडगेवार
माता का नाम	:	रेवती बाई
भाई	:	दो बड़े।
बहनें	:	तीन, दो बड़ी, एक छोटी
प्राथमिक शिक्षा	:	नील सिटी हाई स्कूल, नागपुर।
उच्च शिक्षा	:	नेशनल मेडिकल कॉलेज, कोलकाता से डॉक्टरी की उपाधि।
संघ की स्थापना	:	सन् 1925 में विजयदशमी के दिन।
संघ की प्रथम शाखा	:	मई, 1926 से लगनी आरंभ हुई।
स्वतंत्रता संग्राम	:	स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और दो बार जेल गए।
देहांत	:	21 जून, 1940, नागपुर।

•••

RSS Archives